

गायो मंगल वाधाई भई मन भाई

स्वामिनि प्यारी आई आ ।

सजनी मिलि आओ पालने को झुलाओ

सुनैना सरसाई आ ॥

वैसाख शुक्ल नौमी सलोनी जनकराय घर जाई ढिटौनी

गाओ मंगलाचार मिलके नर नारि समय सुखदाई आ ॥१॥

जननी जनक मिली हरु हलायो मन भावंदो वरु पायो

आई साकेत सरकार कनि देव जैकार फूलनि वर्षाई आ ॥२॥

कोटि सूरज सम भई उज्यारी सहस सखी विचि जनक दुलारी

परम अनोखो आनंद ठरिया निमि कुल चंद बची गोद उठाई आ ॥३॥

गगन मण्डल मां मिठी धुनि थियड़ी साकेत स्वामिनि थी जनक
धीयड़ी

जुगा जुग जियो सुधा रस पियो भूमि हर्षाई आ ॥४॥

साकेत स्वामिनि शिशुरूप धारे उआं उआं बोल श्री राम उचारे

भई वर्षा अपार थी गुलों गुलजार अमां अंचल छिपाई आ ॥५॥

नचंदा नचंदा अंडण में आया साईं अमड़ि मिली मंगल मनाया

करे सभु कुरिबान दिनों दीननि खे दान भई मंगल वाधाई आ ॥६॥

श्री पार्थिव प्यारी पालने में झूले प्यारो परिवार मगनुमन फूले
भई मिथिला में मौज रस आनंद जा चोज आशीश मौज मचाई
आ ॥७॥